Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

1900 से 1947 तक साहित्यिक पत्रिकाओं का स्वरूप

Niraj Kumari*

M.A. in Hindi, (M.Phil, KUK) MDU

सार - 1947 से पहले रचनाकारों ने पत्रकारिता के माध्यम से ही साहित्य के विभिन्न मानदण्ड स्थापित किए। साहित्य की सभी विधाएं जैसे कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास, आलोचना, एकांकी आदि रचनाकारों और पत्रकारों द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा ही प्रकाश में आई। इन सभी विधाओं का निरंतर विकास साहित्यिक पत्रकारिता के द्वारा ही हुआ। साहित्यिक पत्रकारिता का प्रारंभ भले ही 'भारतेंदु हरिशचन्द्र' से हुआ लेकिन यहां से शुरू होकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता पल्लवित हुई और धीरे-धीरे पत्रकारिता के स्वरूप में भी बदलाव होता चला गया।

1947 से पहले प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या कम नहीं थी।

----------X----------

सन् 1900 से 1947 तक की प्रमुख पत्रिकाएं:-

1. नागरी प्रचारिणी पत्रिका

भारतेंदु युग की इस पत्रिका का प्रकाशन काशी में 1893 में बाबू श्यामसुंदर दास के संपादकत्व में हुआ। पहले यह पत्रिका त्रैमासिक रूप में प्रकाशित होती थी। लेकिन वर्तमान में मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रही है। यह एक 'शोध-पत्रिका' है और इसमें हिन्दी साहित्य इतिहास, आलोचना जैसे विषयों पर विचारपूर्ण, गंभीर शोध लेख प्रकाशित हुए।

सरस्वती

इस साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन 1900 में महावीर प्रसाद द्विवेदी के द्वारा काशी में किया गया। इस पत्रिका के प्रकाशन से साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ।

सम्मेलन पत्रिका

यह पत्रिका द्विवेदी युग की प्रमुख शोध पत्रिका है और इसका प्रकाशन 1913 में प्रयाग में 'पं॰ रामनरेश त्रिपाठी' द्वारा किया गया। साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक विषयों पर आधारित शोध लेख इसमें प्रकाशित होते थे।

हंस

इस पत्रिका का संपादन प्रेमचंद ने किया और प्रकाशन 1930 में काशी में हुआ। इस पत्रिका का स्वंतत्रतापूर्व पत्रिकाओं में विशेष महत्व रहा है। कुछ समय बाद इस पत्रिका का संपादन भार राजेन्द्र यादव ने संभाला। निंबध, एकांकी, आलोचना, लघुकथा, गीत, कविता आदि विधाओं का इसमें प्रकाशन होता रहा। हंस पत्रिका ने साहित्य की पुरानी परंपराओं को तोड़कर नई परंपराओं की स्थापना कर पत्रकारिता जगत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राष्ट्र भारती

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में तो इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहा ही है साथ-साथ आन्तर-भारती भाषाओं में कविता, कहानियाँ और लेखों का प्रकाशन भी इस पत्रिका में सफलता से हुआ है। इस पत्रिका का प्रकाशन में 1936 में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा किया गया।

साहित्य संदेश

बाबू गुलबराय ने 1938 में 'आगरा' से इस पत्र का प्रकाशन किया। यह साहित्यिक लेखों तथा शोध सामग्री के लिए यह पत्रिका प्रमुख रही।

www.ignited.in

आजकल

यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से भिन्न थी क्योंकि यह साहित्य में एक नया स्वर लेकर आगे बढ़ी। प्रारंभ में इसका संपादन श्री अनंतकुमार शास्त्री द्वारा किया गया। इस पत्रिका में अनूदित रचनाओं को भी स्थान दिया गया।

साहित्यिक विधा के आधार पर निंबध/लेख:

स्वरूप विवेचन रचनाकार अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए साहित्य की किसी भी विधा का चुनाव कर सकता है। स्वतंत्रता से पहले पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी साहित्य की अनेक विधाएं पल्लवित और पुष्पित हुई। साहित्यकारों को जहां से भी कुछ नया मिला वह उन्होने लिया और सृजनात्मक लेखन के परिणामस्वरूप कुछ पत्रकारों, साहित्यकारों को लोकप्रियता भी हासिल हुई। भारतेंदु काल में नाटक, निबंध, लेख, प्रहसन, व्यंग्य जैसी विधाएं अधिक छपती रहीं तो द्विवेदी युग में उपन्यास, नाटक, कविता, गीत, संस्मरण विधाओं की प्रमुखता थी। साहित्यिक पत्रकारिता जगत में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का उदय और अस्त हुआ लेकिन फिर भी कुछ उत्कृष्ट पत्रिकाएं दुर्लभ और उच्चकोटि के साहित्य का प्रकाशन करती रही।

निबंध एक सशक्त और स्वतंत्र विधा है इसमें भावों और विचारों को गंभीर शैली में प्रस्तुत किया जाता है। निंबध विषयीगत होते हैं और लेख मुख्यतः विषयगत होते हैं। बाबू गुलाब राय के शब्दों में, "निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव, सजीवता तथा आवश्यक संगोपाग सम्बद्धता के साथ किया गया हो। किंतु जहाँ एक लेख प्रश्न हैं उसमें आत्मीयता भावुकता स्वच्छंदता अथवा मूल विषय से भटकने की गुंजाइश ही नहीं होती।"

ऐतिहासिक लेखन का आधार:-

इसके अंतर्गत इतिहास और पुरातत्व से संबंधित लेख आते हैं। 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में इतिहास और पुरातत्व से संबंधित लेखों का प्रकाशन अधिक हुआ है। जैसे - 'छिताई-चरित नाम ऐतिहासिक शोध, श्री बुद्ध प्रकाश द्वारा लिखित 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की पश्चिमोत्तरी विजय यात्रा, 'जैनाचार्य श्री विजय चंद्र सूरि' का 'कुसण शब्द का अर्थ' आदि लेख नागरी प्रचरिणी पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं

सामाजिक लेखन का स्वरूप:-

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें समाज का परिवेश, वातावरण, युगीन व्यवस्था का चित्रण किया जाता है। 'सरस्वती पत्रिका' में सामाजिक लेख प्रकाशित हुए। सामाजिक लेखन के द्वारा समाज में चेतनता को जाग्रत किया जा सकता है क्योंकि यह सामाजिक लेखन मनुष्य की मानसिकता को झिंझोड़कर रख देते हैं और इस कारण ये परिवर्तन भी लाते हैं समाज में 'सरस्वती' पत्रिका में 'पुनर्जन्म पर शोध-, 'हिमाचल के 'लोकगीतों में विरह-वेदना', 'लोकगीतों में मजाकिए रिश्ते' नामक सामाजिक लेखों का प्रकाशन हुआ है। इस पत्रिका में प्रकाशित इन लेंखों का प्रकाशन हुआ है। इस पत्रिका में प्रकाशित इन लेखों का मूल स्वर सामाजिक रहा है।

धार्मिक लेखन का स्वरूप:-

'सरस्वति' पत्रिका में धार्मिक विषयों से संबंधित लेखन का भी प्रकाशन हुआ है। धार्मिक लेखों के अंतर्गत श्री नारायण चतुर्वेदी द्वारा गोस्वामी की महान कृति 'रामचरितमानस', डॉ. दामोदर झा द्वारा लिखा ' श्रीमद्भागवत की भूमिका' का प्रकाशन किया गया। इसी तरह सम्मेलन पत्रिका के अंक में श्री राघवाचार्य का 'वैखानसागम', प्रो. नरेश बंसल का 'श्रीरामराय प्रभु और उनके द्वादश शिष्य' आदि ये धार्मिक चेतनता को आधार बनाकर लिखे गए।

अन्य विषयों से संबंधित लेख:-

साहित्यिक पत्रिकाओं में सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक लेखों का ही प्रकाशन नहीं हुआ बल्कि विज्ञान और कला से संबंधित विषयों पर भी लेख लिखे गए और प्रकाशित हुए। इसमें 'सरस्वती' पत्रिका और 'हंस' पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सरस्वती पत्रिका में 'अपधर्षक-पदार्थ' और 'हंस' पत्रिका में हरिप्रकाश त्यागी का 'पत्थरों में उलीचा भावनाओं का इतिहास' नामक लेख प्रकाशित हुए।

कहानी के स्वरूप की विवेचना:-

कहानी एक गद्य विधा है और इसमें कहने-सुनने का भाव निहित होता है क्योंकि कहानी की शुरूआत ही तब होती है जब हम अपने व्यक्तिगत अनुभवों (कहने का भाव) को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत (सुनने का भाव) करते हैं। इसी कहने-सुनने की कला से 'कहानी' की शुरूआत हुई। कहानी के लिए अनेक पर्यायों जैसे - 'आरव्यायिका', व कथा का प्रयोग किया जाता

www.ignited.in

है। पाश्चात्म साहित्य में कहानी के लिए 'शार्ट-स्टोरी' शब्द का प्रयोग किया जाता है। कहानी विधा का जीतनी तीव्र गति से विकास हुआ है उतना अन्य किसी विधा का नहीं। कहानी को भी दो रूपों में बांटा गया है - लघु कहानी औश्र लंबी कहानी। इसके अतिरिक्त यदि कहानी औसत आकार वाली है तो उसे 'कहानी' का नाम दिया गया है।

लघु कथा का स्वरूप:-

लघु कथाओं में व्यंग्य की प्रधानता होती है और इसमें समाज की विंसगतियों, विद्रुपताओं, समस्याओं पर बड़े व्यंग्य स्वर में कटाक्ष किए जाते हैं जो पाठक की चेतना को उद्वेलित कर देती है।

लंबी कथा का स्वरूप:-

यह लघु कथा से बिल्कुल भिन्न होती है। इसमें जीवन से संबंधित घटनाओं का विस्तार से उल्लेख किया जाता है, यह जीवन के किसी एक बिंदु को लेकर नपहंी चलती बल्कि जीवन के कई रूपों का चित्रण हमें लंबी कहानी में देखने को मिलता है। इसमें लेखक द्वारा समाज की घटनाओं, समस्याओं का चित्रण ऐसी सजीवता से किया जाता है कि वे हमें अपने आस-पास घटित हुई जान पड़ती है हम उसकी (लेखक) लय में बँधते चले जाते हैं और पाठक के अंदर एक तरह की जिज्ञासा भी उत्पन्न होती जाती है।

हमारे सामने कहानी के दो रूप सामने आते हैं:-

1) मौलिक कहानी

2) अनूदित कहानी

1) मौलिक कहानी:- स्वतंत्रता से पहले पत्र-पत्रिकाओं में मौलिक रचनाएं अधिक प्रकाशित होती थी लेकिन बाद में अनूदित रचनाओं की भी काफी मात्रा में प्रकाशन हुआ। अनूदित रचना में स्त्रोत् भाषा में लिखी गई कहानी को लक्ष्य भाषा में ज्यों का त्यों बिना किसी फेर-बदल के रख दिया जाता है। वे विचार अनुवादक के अपने मौलिक नहीं होते।

कहानी के रूपों का चित्रण:-

अनेक विषयों को आधार बनाकर कहानी लिखी जा सकती है। जैसे: सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, वैज्ञानिक आदि।

(1) सामाजिकता को आधार बनाकर कहानी लेखन:- साहित्य और समाज एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं इन्हें एक ही सिक्के के दो पहलु माना जाता है। दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे, अपूरक हैं। मनुष्य समाज में रहता है और समाज किसी न किसी रूप में साहित्य से जुड़ा होता है। कहानीकार इसी समाज में पैदा होता है, जीवन के अनुभवों को देखता-सीखता है और फिर इन्हीं-अपने अनुभवों और समाज में जो बुराई-अच्छाई, रीति-रिवाज, परंपराएँ, रहन-सहन, लोगों के आपसी संबंधो को देखता है उसे अपनी रचनाओं में चित्रित कर देता है। वह कई बाद इन जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों, परंपराओं से उद्वेलित होकर एक नया जीवन आरंभ करने का भी संदेश देता नजर आता है जहां जीवन में इन गली-सड़ी मानसिकताओं के लिए जगह न हो। सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित 'एक ओर कामायनी', हंस पत्रिका में प्रकाशित रमाकांत द्वारा लिखित 'मिस्टर सिन्हा का इस्तीफा', 'मौत अलीबाबा की', खुशियों का बाद', 'एक साथी का अंतिम संस्कार', 'तस्वीर' आदि कहानियां सामाजिक परिवेश से संबंधित है।

(2) राजनीतिकता को आधार बनाकर कहानी लेखन:- राजनीति से संबंधित विषयों को आधार बनाकर कहानी लिखना, राजनीतिक कहानी के अंतगत आता है। साहित्यकार राजनीति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता क्योंकि राजनीति और समाज एक-दूसरे से प्राण रस ग्रहण करते हैं। साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में राजनीतिक समस्याओं के अनेक चित्र उकेरे है। 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित अनूदित कहानी 'महात्माओं के आंसू' राजनीति के गंदेपन को, निकृष्टतम रूप को चित्रित करती ळें

इसी तरह राजीतिज्ञों द्वारा किए गए खोखले वायदे, वोट बैंक की गंदी राजनीति, अपनी स्वार्थ वृत्ति की पूर्ति के लिए महात्माओं के आदर्शों को ताक पर रख देना, लूट-खसौट, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं का चित्रण साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में राजनीति को पृष्ठभूमि बनाकर किया है।

धार्मिकता को आधार बनाकर किया गया कहानी लेखन:- धर्म का प्रभाव समाज पर ज्यादा देखने को मिलता है। इसके अंतर्गत ईश्वर की भक्ति, उपासना, साधना, विश्वास एवं आस्था को आधार बनाया जाता है। पत्र-पत्रिकाओं में भी ऐसी कहानियां प्रकाशित हुई हैं जिनका सीधा संबंध धार्मिक चेतना से है और उसमें सभ्यता, संस्कृति से जुड़े संस्कार,

www.ignited.in

अंधविश्वासों और परंपराओं का चित्रण देखने को मिलता है। 'सरस्वती' में प्रकाशित तमिल कहानी 'सीढ़ीयाँ', 'हंस' में 'ऋता शुक्ला' की कहानी 'मानुस तन', 'राष्ट्रभारती' में प्रकाशित अनूदित कहानी 'मुन्नी की साहित्य-शिक्षा' आदि कहानियों में धार्मिक मनोवृत्ति का चित्रण किया गया है।

ऐतिहासिकता को आधार बनाकर किया गया लेखन:- ऐतिहासिकता के अंतर्गत कहानियों में अतीत का गौरव-गान, वैभव आदि को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय होता है। 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित 'वीर पत्नी कण्णकी देवी', 'सीढ़ीयां' ऐतिहासिकता को आधार बनाकर लिखी गई कहानियां है। इस प्रकार पत्रिकाओं में छपी कहानियों का स्वरूप सामाजिक, राजनीतिक ऐतिहासिकता का स्वर लिए हुए है।

कविता के स्वरूप पर विवेचना:-

मनुष्य का जब से प्रकृति से संबंध जुडा है उसी समय से उसका कविता के साथ भी संबंध जुड़ गया है। जयशंकर प्रसाद ने काव्य को आत्मा की अनुभूति माना है। काव्य में रचनाकार की मानवीय भावनाएं और उद्‌गार होता है। भाव, कल्पना, बुद्धि और शैली इन चारों तत्वों को मिलाकर लिखा गया काव्य सर्वोत्म अर्थात् उच्च कोटि का होता है। कहानी की तरह ही कविता के भी मौलिक और अनूदित दो रूप माने गए हैं। कविताओं का स्वरूप सामाजिक, राष्ट्रीय, मानवीय रहा है। 'आजकल' पत्रिका में प्रकाशित 'कुन्दर्ति आजनेयुलु' द्‌वारा लिखी 'कविता' में मूल रूप से संघर्ष, पीड़ा, दुःख-दर्द, व्यथा आदि का चित्रण (सामाजिकता से जुड़ी) किया गया है। 'राष्ट्र भारती' पत्रिका में छपी 'पसंदगी' में कविता का भाव वैज्ञानिक और भौतिक युग में नए-नए आविष्कार करने से संबंधित रहा है।

गीतों का प्रकाशन:-

जब काव्य के साथ् संगीत जुड़ जाता है तो वह गीत की श्रेणी में आ जाता है। गीत मानव जीवन की रागात्मक एवं संगीतात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। गीत मानव हृदय की हर्ष-विषाद की भावनाएं प्रकट करने वाली एक सरल, सहज निश्छल भावना होती है। गीतों में भी अनेक प्रकार के भावों और विषयों का चित्रण किया गया है। जैसे:- 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित डॉ. 'कमलाकांत हीरक' के गीतों में प्रेम और मिलन का स्वर, 'प्रीत का दिवस आ रहा है' में 'प्रेम का चित्रण, कहीं वेदना की प्रधानता तो 'बात करें अजुरी भर' में मानवतावादी स्वर प्रमुख हैं।

संस्मरण के स्वरूप पर प्रकाश:-

संस्मरण में लेखक अपनी स्मृति पटल के आधार पर घटनाओं का वर्णन करता है। संस्मरण का अर्थ ही होता है बीती हुई बातों का वर्णन करना। इसमें लेखक अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर अज्ञात तथ्यों से रूबरू करवाता है। अंग्रेजी में संस्मरण के लिए 'मेमाइर' तथा 'रेमिनिर्सेसेज' का प्रयोग किया जाता है।। संस्मरण में कल्पना का स्थान नहीं होता क्योंकि यह वास्तविकता पर आधारित होता है और इसमें आत्मीयता का गुण होना अनिवार्य माना गया है। विषय की प्रवृति के आधार पर संस्मरणों को 'घटना प्रधान' और 'चरित्र प्रधान' संस्मरणों की संख्या अधिक है। चरित्र प्रधान संस्मरणों में नायक के बाह्य और आंतरिक चरित्र को उभारा जाता है। हंस पत्रिका में प्रकाशित 'जयशंकर प्रसाद' द्‌वारा रचित संस्मरण 'अतीत के स्मृति बिंब में रेणु', 'आजकल' पत्रिका में प्रकाशित 'संपूर्णानंद जी का व्यक्तित्व', काशीनाथ द्‌वारा लिखा 'बाबू जी चले गए' आदि चरित्र प्रधान संस्मरण पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। चरित्र प्रधान संस्मरण व्यक्ति प्रधान संस्मरण होते हैं इनमें विशिष्ट व्यक्तियों के चरित्र को विशेषकर उभारा जाता है।

घटना प्रधान संस्मरणों में यथार्थ घटनाओं को आधार बनाया जाता है। इसमें व्यक्ति चरित्र को अधिक महत्व न देकर घटनाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। जैसे:- 'राष्ट्रपिता महात्मा गांधी: कुछ हृदयस्पर्शी संस्मरण' यह गांधी जी के लाहौर सफर के दौरान घटित घटना के आधार बनाकर लिखा गया संस्मरण है। और इसमें गांधी के संघर्ष, न्यायपूर्ण जीवन, अहिंसा तथा सत्य का प्रकाशन भी किया गया है। इस प्रकार घटना प्रधान संस्मरणों का उद्देश्य महान व्यक्तियों के आदर्शों की स्थापना करना भी रहा है। इस प्रकार के संस्मरणों में उन महान व्यक्तियों के चरित्र को प्रदर्शित करने वाले प्रेरणादायक, रोचक घटनाओं का समावेश भी होता है। इस प्रकार इन संस्मरणों में उस महान व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रशस्तिगान की अनूगूंज भी सुनाई पड़ती है।

Corresponding Author

Niraj Kumari*

M.A. in Hindi, (M.Phil, KUK) MDU

anilpro1000@gmail.com

www.ignited.in